"Role of agriculture productivity in Indian Economic Development"

भारत के आर्थिक विकास में कृषि उत्पादकता की भूमिका

भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्वपूर्ण स्थान रहा है और भी यह महत्वपूर्ण है। वास्तव में कृषि हमारे देश में केवल जीविकोपार्जन का साधन या उद्योग-धन्धा ही नहीं है बल्कि अर्थव्यवस्था की रीढ़ ही हड्डी है। देश के उद्योग-धन्धे, विदेशी व्यापार, विदेशी मुद्रा अर्जन, विभिन्न योजनाओं की सफलता एवं राजनीतिक स्थायित्व भी कृषि पर निर्भर है। एक बार स्वतन्त्रता भी जवाहरलाल नेहरू ने कहा था कि "कृषि को सर्वाधिक प्राथमिकता देने की आवश्यकता है। यदि कृषि असफल रहती है तो सरकार एवं राष्ट्र दोनों ही असफल रहते हैं"। ~~कृषि को महत्व~~ इस प्रकार भारत के आर्थिक विकास में कृषि उत्पादकता की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण है। जिसकी व्याख्या निम्न रूपों में की जा सकती है।

(1) कृषि में सर्वाधिक रोजगार :- भारतीय अर्थव्यवस्था कृषि का 67 प्रतिशत जनसंख्या प्रत्यक्ष रूप से रोजगार देती है। इसके अतिरिक्त कृषि व्यवसाय में करोड़ों लोग लगे हुए हैं जो कृषि सम्बन्धी क्रियाओं में योगदान देते हैं।

(2) **राष्ट्रीय आय का मुख्य स्रोत** (Main Source of National Income)—कृषि का राष्ट्रीय आय में सबसे अधिक योगदान रहता है। सरकारी आँकड़ों के अनुसार 1982-83 में देश की राष्ट्रीय आय में कृषि एवं उससे सम्बन्धित क्षेत्र का हिस्सा 38·6 प्रतिशत है।[1]

(3) **उद्योगों का आधार** (Basis of Industries)—अधिकांश महत्वपूर्ण भारतीय उद्योगों को कच्चा माल खेती से ही प्राप्त होता है जैसे सूती वस्त्र, चीनी, चाय, काफी, रबड़, वनस्पति घी, तेल सभी उद्योग कच्चे माल के लिए खेती पर ही निर्भर हैं। लघु उद्योगों में चादल, आटा, तेल व दालें आदि के मिलों को भी कच्चा माल कृषि से ही मिलता है।

(4) **विदेशी व्यापार में महत्व** (Importance in Foreign Trade)—भारतीय कृषि का विदेशी व्यापार में भी महत्वपूर्ण स्थान है। यहाँ के कुल निर्यात का लगभग 35 प्रतिशत निर्यात कृषि पदार्थ तथा कृषि से सम्बन्धित कच्चे पदार्थों पर आधारित उद्योगों द्वारा किया गया है।[2]

(5) **खाद्यान्नों की पूर्ति** (Supply of Foodgrains)—वर्तमान में खाद्यान्नों की आवश्यकताओं की लगभग शत-प्रतिशत आवश्यकता की पूर्ति भारतीय कृषि द्वारा की जाती है।

(6) **भूमि का सर्वाधिक उपयोग कृषि के लिए** (Maximum Use of Land in Agriculture)—देश के भूमि क्षेत्रफल का सर्वाधिक भाग कृषि के काम में आता है। "वर्तमान में देश के 32·88 करोड़ हेक्टेयर भूमि के क्षेत्रफल में 14·3 करोड़ हेक्टेयर भूमि में कृषि की जाती है[3] जो कुल भूमि क्षेत्रफल का 43·3 प्रतिशत बैठता है।"

(7) **राजस्व में योगदान** (Contribution to Govt. Revenue)—राजस्व में भी कृषि का अच्छा योगदान है। करोड़ों रुपये प्रतिवर्ष की आय लगान व कृषि आय कर से होती है। इसके अतिरिक्त कृषि वस्तुओं के निर्यात पर निर्यात कर से भी सरकार को राजस्व मिलता है।

(8) **पशुओं का चारा** (Fodder)—देश में लगभग 37 करोड़ पशुओं के होने का अनुमान है। इन सभी को चारा कृषि से ही प्राप्त होता है।

(9) **परिवहन साधनों का मुख्य आधार** (Main Basis of Transport Means)—परिवहन के साधनों रेलों, मोटरों व बैलगाड़ियों, आदि के लिए खाद्यान्नों व अन्य कृषि उत्पादित वस्तुओं का लाना व ले जाना एक मुख्य आधार है। इसको इस प्रकार भी कहा जा सकता है कि इनके द्वारा जो ढुलाई की जाती है उसमें कृषि का महत्वपूर्ण योगदान है।

(10) **अन्तर्राष्ट्रीय महत्व** (International Importance)—अन्तर्राष्ट्रीय नक्शे में भारत को महत्वपूर्ण स्थान दिलाने में कृषि का उल्लेखनीय स्थान है। भारत का विश्व उत्पादन में चाय व मूँगफली का प्रथम स्थान है जबकि चावल, कपास, गन्ने एवं जूट में दूसरा स्थान है। लाख के उत्पादन में तो भारत का एकाधिकार है।

संदर्भ सूची:-

1. भारतीय अर्थशास्त्र, जैन एवं मेमोरिया
2. भारतीय अर्थशास्त्र, डा० सुमन
3. भारतीय अर्थव्यवस्था, एस० एन० कोठारी

प्रो० (डा०) धीरेन्द्र कुमार सिंह
विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग
डी० के० कॉलेज, डुमराँव, बक्सर
मोबाइल- 9430006733
ई मेल :- dksinghvksu@gmail.com